शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKflr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofek;k dk lokfekd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४८ : नई दिल्ली : ४-१० मार्च २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए राणी स्टेशन पधार गए हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। १८ मार्च को मारवाड़जंक्शन, २३-२५ मार्च सिरियारी, ३१ मार्च से १ अप्रेल बगड़ी व ४-८ अप्रेल पाली में प्रवास करेंगे। महावीर जयंती का आयोजन पाली में होगा। आगामी ३१ मई को समदड़ी में और २ जून को पारलू में दीक्षा महोत्सव का आयोजन होगा।

ije J); vkpk;Jh egkJe.k tlky dh vkj

o;ko) dk n'ku] ckyd e ifjoru

„„ QjojhA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज नान्देशमा से पदराड़ा के लिए प्रस्थान किया। पूज्यवर ने नान्देशमा के १०५ वर्षीय रूपालाल नाई के घर पधार कर उन्हें दर्शन दिए। आचार्यवर के दर्शन कर उस वयोवृद्ध में भी युवक का-सा जोश जाग गया। पूज्यप्रवर मार्गवर्ती ढोल गांव के 'शील गुरुणी पावन धाम' नामक स्थान में भी पधारे। संस्थान के अध्यक्ष श्री हीरालाल मादरेचा आदि कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। पूज्य आचार्यवर ने उपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ढोल से कमोल की ओर गतिमान थे। मार्ग में श्रावकों ने जसवंत लखारा नामक लगभग बारह वर्षीय बालक को आचार्यवर के दर्शन कराए और निवेदन किया--'पूज्यप्रवर ! यह बालक प्रतिदिन एक बंडल बीड़ी पीता है। उसका परित्याग कराएं।' आचार्यवर ने वात्सल्यपूरित वाणी में उस बालक को प्रेरणा प्रदान की, फलस्वरूप बालक ने बीड़ी न पीने का संकल्प स्वीकार कर लिया। आचार्यवर की प्रेरणा से उस बारहवर्षीय बालक के जीवन का रूपान्तरण हो गया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर कमोल गांव के भीतर पधारे। यहां लगभग सवा घंटे के प्रवास के दौरान सभी श्रद्धालुओं के घरों में पूज्यप्रवर का पदार्पण हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के द्वारा स्वागत गीत के संगान के पश्चात् तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल झोठा, श्री प्रकाश झोठा और श्रीमती रीटा परमार ने अपने आराध्य के स्वागत में अभिव्यक्तियां दीं। श्री विक्रम परमार आदि कार्यकर्ताओं ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए नशामुक्ति के संकल्प पत्र पूज्यवर को उपहृत किए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में जनता को शांति प्राप्ति हेतु राग-द्वेष की विमुक्ति की साधना करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर ने स्थानीय श्रद्धालुओं को पारिवारिक सेवा का अवसर भी प्रदान किया।

lkxkr le>xh

परमाराध्य आचार्यवर का नान्देशमा से पदराड़ा के बीच विहार के दौरान ढोल और कमोल में रुकना पूर्व निर्धारित था। नान्देशमा प्रवास के दौरान पक्खी के खमतखामणा के पश्चात् रात्रि में संतों ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'प्रभो! कल का विहार लम्बा है और बीच में ढोल और कमोल में रुकना भी है। इस

प्रकार पदराड़ा पहुंचते-पहुंचते लगभग बारह बज जाएंगे। अतः आप कमोल में प्रातराश करवाने की कृपा कराएं।' कुछ चिन्तन के उपरान्त पूज्यप्रवर ने संतों के निवेदन को स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन प्रातः विहार से पूर्व सूर्योदय के समय पूज्य आचार्यवर ने मुनि गौरवकुमारजी को साध्वियों के स्थान पर इस सूचना के साथ भेजा कि हमें कमोल में प्रातराश करना है। अतः साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां अभी दर्शन कर लें, ताकि उनके भी प्रातराश में बिलंब न हो। उल्लेखनीय है--साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी गुरुदर्शन के बिना आहार ग्रहण नहीं करतीं। मुनि गौरवकुमारजी साध्वियों के स्थान पर पहुंचे, उससे पूर्व साध्वीप्रमुखाजी ने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर दिया था और वह पथ पूज्यवर के विहार पथ से भिन्न था।

आचार्यवर ने विहार के दौरान संतों से कहा--'साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों से पक्खी के खमतखामणा किए बिना चारों आहार-पानी ग्रहण करने का भाव नहीं है। पूज्यवर ने अपने इसी निर्णय के आधार पर कुछ भी ग्रहण नहीं किया। पदराड़ा पहुंचने पर साध्वीप्रमुखाजी को जब इस बात की जानकारी मिली तो उन्होंने साध्वी अनुशासनाश्रीजी और साध्वी सुनन्दाश्रीजी को एक पत्र देकर पूज्यवर की अगवानी में भेजा। साध्वीप्रमुखाजी द्वारा प्रेषित पत्र इस प्रकार है--

परम प्रतीक्ष्य पूज्यप्रवर !

श्रद्धासिक्त वंदना।

वहां गुरुदर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता, पर अंतराय का योग रहा।

खमतखामणा यहां पधारने पर ही हो पाएगा।

आप कृपा कर कुछ पेय लिराने का अनुग्रह करें। इस कृपा को अपने जीवन की सौगात समझूंगी।

आपकी चरणरज

dudiHkk

लगभग बारह बजे गांव से लगभग डेढ़ किमी. की दूरी पर साध्वियां पूज्यवर की अगवानी में पहुंचीं और साध्वीप्रमुखाजी द्वारा प्रेषित पत्र समर्पित किया। आचार्यवर ने पत्र को पढ़ा और साध्वियों द्वारा लाए गए पेय पदार्थ को ग्रहण कर लिया।

पूज्यवर के कठोर परिश्रम, साध्वीप्रमुखाजी के प्रति कृपा और सम्मान के भाव तथा साध्वीप्रमुखाजी के विनय भाव को देखकर हर दर्शक अभिभूत था।

ik.kh l ugh] iki l ?k.kk dj

पूज्यवर आज कुल १४ किमी. का विहार कर पदराड़ा पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से गांव में सर्वत्र अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। श्रद्धालुजन प्रसन्नता के सागर में गोते लगा रहे थे। आचार्यवर का एकदिवसीय प्रवास अपने निवास पर पाकर श्री रोशनलाल, भगवतीलाल, मोहनलाल बाफणा परिवार अत्यन्त आह्लादित था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पदराड़ा तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के पश्चात् श्री फूलचन्दजी चोरड़िया, श्री सुरेश बाफना, जेनिश जैन, दीक्षित बाफना आदि ने श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मानव जाति एक है। मानव-मानव एक ही जाति के अंग हैं। व्यवहार की दुनिया में विवक्षा के अनुसार भेदाभेद का दर्शन चलता है। एकान्ततया भेद अथवा अभेद कठिनाई पैदा करने वाला बन जाता है। प्राणियों में शरीर, जाति आदि की दृष्टि से विभिन्न भेद होते हैं। कर्म एवं आचरण की दृष्टि से भी भेद किया गया। किन्तु इस भेद के आधार पर मानव मानव से घृणा न करे। घृणा मानवीय एकता में बाधा है। घृणा भी एक पाप है। घृणा प्राणी से

नहीं, पाप से करें। प्राणीमात्र के प्रति विशुद्ध प्रेम का भाव रहे। विराट मैत्री और अहिंसा का भाव जागने पर व्यक्ति सज्जन पुरुष बन जाता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'पदराड़ा के मुनि अर्हतकुमारजी युवा अग्रणी और अच्छा कार्य करने वाले संत हैं। वे स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अच्छा कार्य करते रहें। साध्वी श्रेयसप्रभाजी नान्देशमा की साध्वी हैं। वे भी अच्छी साधना करती रहें।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन में पदराड़ा के उपासक श्री सुरेश बाफना और श्री गेहरीलाल बाफना की सेवाओं का भी उल्लेख किया।

पूज्यवर का आज यह दूसरा प्रवचन था। प्रथम प्रवचन कमोल में हुआ। पदराड़ा में साठ तेरापंथी परिवार और दस अन्य जैन परिवार हैं। पूज्यवर सायंकालीन आहार के पश्चात श्रद्धालुओं के घरों में पधारे। अवशिष्ट घर दूसरे दिन विहार से पूर्व पूज्यवर की चरणरज से पावन बने। रात्रि में श्रद्धालुओं को आचार्यवर की उपासना का अवसर भी प्राप्त हुआ। इस दौरान लोगों ने विविध संकल्प भी स्वीकार किए।

rjkiFk d fodkl drk vkpk; Fk dkyx.kh

„… QjojhA परमपूज्य आचार्यवर आज प्रातः पदराड़ा से विहार करने से पूर्व भगवती मेमोरियल हास्पिटल में पधारे। पदराड़ा से सेमड़ की ओर विहार करते हुए मार्गवर्ती सांचली गांव के नवज्योति सीनियर सेकेंड्री स्कूल के विद्यार्थियों को पूज्यवर से मंगल प्रेरणा प्राप्त हुई। विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्त रहने का संकल्प भी स्वीकार किया। पूज्यवर मार्ग से लगभग आधा किमी. भीतर स्थित श्री महावीर जैन गोशाला उमरणा में पधारे। अध्यक्ष श्री हीरालाल मादरेचा व पदाधिकारियों ने पूज्यवर का स्वागत करते हुए संस्थान के विषय में अवगति दी। पूज्यवर ने उपस्थित जनसमूह को पावन संबोध प्रदान किया।

इस प्रकार ५.०६ किमी. का विहार कर पूज्यप्रवर सेमड़ पधारे। आचार्यवर के स्वागत में सेमड़ का कण-कण उल्लसित था। श्रद्धालुओं के हृदय में उमड़ता हुआ श्रद्धा का ज्वार उनकी मुखाकृति पर मुखरित हो रहा था। सेमड़ में पूज्यवर का प्रवास स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्यामंडल ने गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री सोहनलाल तलेसरा, श्री कान्तिलाल सिसोदिया और श्री गणेश नान्दरेचा ने अपने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त किए। श्री बाबूलाल पूनमिया ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज फाल्गुन शुक्ला द्वितीया अर्थात् फुलड़िया दूज है। हमारे धर्मसंघ का इतिहास इस दिन के साथ जुड़ा हुआ है। इस दिन अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी का जन्म हुआ था। इतना ही नहीं, अणुव्रत, पारमार्थिक शिक्षण संस्था और आदर्श साहित्य संघ का विधिवत जन्म भी आज के ही दिन हुआ था। महामना कालूगणी ने धर्मसंघ को नई दिशाएं दीं। उनके युग में धर्मसंघ में संस्कृत भाषा का विकास और नये क्षेत्रों का विस्तार हुआ और सबसे बड़ी बात तो यह कि उन्होंने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे युगप्रधान आचार्य संघ को सौंपे। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तन से पूर्व तेरापंथ का दायरा सीमित था। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के रूप में एक ऐसा वरदान दिया कि संघ सीमित दायरे से निकल कर जन-जन तक पहुंच गया। परमार्थिक शिक्षण संस्था भी हमारे धर्मसंघ के लिए वरदान है। उसके प्रति समाज में भी बहुत अच्छे भाव हैं। दीक्षा के पूर्व शिक्षा के उद्देश्य से स्थापित यह संस्था दूरदर्शी आचार्यों की सोच का ही परिणाम है। इस संस्था से सैकड़ों-सैकड़ों भाई-बहन शिक्षित हुए हैं और आज साधु-साध्वी के रूप में संघ का गौरव बढ़ा रहे हैं। हमारे धर्मसंघ में साहित्य के प्रकाशन और प्रचार-प्रसार में आदर्श साहित्य संघ की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रकार आज का दिन धर्मसंघ के लिए महत्त्वपूर्ण है।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'केवली और वीतराग को छोड़कर हर संसारी प्राणी में राग-द्वेष की वृत्तियां रहती हैं। जब वे तीव्र होती हैं तो प्राणी के लिए जाल बन जाती

हैं और उसके लिए उससे निकल पाना मुश्किल हो जाता है। इसलिए व्यक्ति को राग-द्वेष से विमुक्ति की साधना का अभ्यास करना चाहिए। अध्यात्म की मुख्य साधना भी यही है।

फाल्गुन शुक्ला द्वितीया के दिन राग-द्वेष की मुक्ति की साधना के पथ पर आगे बढ़ने वाला एक महापुरुष इस धरती पर उत्पन्न हुआ था। ताल छापर की वह धरा जहां वि.सं. १९३३ में एक बालक का जन्म हुआ था, जो कालान्तर में तेरापंथ के अष्टमाचार्य के पद पर सुशोभित हुआ था। परमपूज्य कालूगणी एक पुण्यवान और तेरापंथ के विकासकर्ता आचार्य थे। उनके युग में संघ शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ा था। कितने ही व्यक्तियों को उनके द्वारा दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पंचमाचार्य मघवागणी का उन पर कृपाभाव था। कहा तो यहां तक जाता है कि यदि मघवागणी का आयुष्य थोड़ा दीर्घ होता तो संभवतः छठे आचार्य कालूगणी ही होते। हालांकि मैंने उन्हें नहीं देखा, किन्तु किसी रूप में मैं भी उनसे जुड़ा हूं। मैंने दीक्षा लेने के लिए चिंतन और निर्णय करने से पूर्व महामना कालूगणी का ही जप किया था। मानों उनका कोई संप्रेषण मिला या प्रेरणा मिली, मैं दीक्षा के लिए कृतनिश्चय हो गया। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ जैसे महापुरुष महामना कालूगणी के द्वारा ही दीक्षित हुए थे। कालूगणी इस मायने में सौभाग्यशाली थे कि उन्हें दो-दो ऐसे शिष्य प्राप्त हुए। यह भी एक संयोग है कि गुरुदेव कालूगणी और गुरुदेव तुलसी का जन्म शुक्ला द्वितीया को ही हुआ। मानों गुरु-शिष्य में कोई तादात्म्य संबंध हो गया था।

आचार्यवर ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा--'आज का दिन अनेक गतिविधियों से भी जुड़ा हुआ है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था एक असाधारण संस्था है। परमार्थ की साधना के लिए उद्यत होने वालों के लिए विकास की संस्था है। मुख्यतया बहनें दीक्षा से पूर्व इस संस्था में रहकर साधना और विद्यार्जन करती हैं। अनेक भाई भी यहां रहने के पश्चात् दीक्षित हुए हैं। यह धर्मसंघ की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। अणुव्रत आन्दोलन गुरुदेव तुलसी का महनीय अवदान है। कितने-कितने व्यक्ति इसके माध्यम से गुरुदेव तुलसी के संपर्क में आए। अपनी सुदूर प्रान्तों की पदयात्राओं में उन्होंने जनता को अणुव्रत का संदेश दिया। आदर्श साहित्य संघ ने साहित्य के क्षेत्र में कितनी सेवाएं की हैं। इसके माध्यम से हमारे धर्मसंघ में आचार्यों और साधु-साध्वियों का विपुल मात्रा में साहित्य प्रकाश में आया है। इस प्रकार आज का दिन महामना कालूगणी और अनेक गतिविधियों के साथ जुड़ा हुआ है।'

सेमड़ समागमन के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'आज हम सेमड़ आए हैं। आज से लगभग पांच वर्ष पूर्व परमपूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी यहां पधारे थे और चार बालकों को दीक्षित किया था। उनमें सबसे बड़े मुनि गौतमकुमारजी और सबसे छोटे मुनि मृदुकुमारजी यहां हैं। इन दोनों के भाइयों को हमने इस बार सेवाकेन्द्र में भेज दिया। मुनि गौतमकुमारजी अच्छे सेवा करनेवाले भले साधु हैं। हमारे साथ प्रायः घूमते रहते हैं। अब तो ये सीखना करने भी लग गए हैं। ये और इनके संसारपक्षीय भाई मुनि सुधांशुकुमारजी भी खूब अच्छा विकास करते रहें। हमारे धर्मसंघ में ऐसे विरल साधु हुए हैं, जो नौ वर्ष से कम अवस्था में दीक्षित हुए। मुनि मृदुकुमारजी उनमें से एक है। इतनी छोटी अवस्था में दीक्षित होना बड़ी बात है। ये अच्छी सेवा करते हैं। इनमें प्रतिभा भी अच्छी है। प्रतिभा का और अधिक विकास करना है। संघ में विद्वान्, बहुश्रुत और साधक मुनि के रूप में विकास करना है। इनके भाई मुनि अनुशासनकुमारजी भी अच्छी सेवा करने वाले मुनि हैं। वे भी खूब अच्छी सेवा और अच्छा विकास करते रहें। लाडनूं में शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्दजी स्वामी ने मुनि आदित्यकुमारजी को उसी दिन दीक्षित किया था। वे भी अच्छा विकास करते रहें।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन में सेमड़ के उपासक श्री कान्ति सिसोदिया द्वारा उपासक के रूप में की जाने वाली सेवा का भी उल्लेख किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

परमपूज्य आचार्यवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात् चालीस से अधिक घरों का स्पर्श किया। रात्रि में स्थानीय श्रद्धालुओं को पूज्यवर की उपासना का अवसर भी प्राप्त हुआ। इस दौरान लोगों ने आचार्यवर से विविध संकल्प स्वीकार किए।

पूज्यवर के सेमड़ पदार्पण पर अंबालाल देवीचन्द तलेसरा परिवार द्वारा आज निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का समायोजन हुआ, जिससे दो सौ पचहत्तर व्यक्ति लाभान्वित हुए। शिविर में परीक्षण के उपरान्त ४४ व्यक्तियों को ऑप्रेशन के योग्य पाया गया, जिनका निःशुल्क ऑप्रेशन दूसरे दिन किया गया।

Ik;jk e HkO; Lokxr

„† QjojhA परमपूज्य आचार्यवर ने आज प्रातः विहार से पूर्व सेमड़ के साठ से अधिक घरों का स्पर्श किया। अनेक जैनेतर समाज के घर भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बने। पूज्यवर का अंबालाल देवीचन्द तलेसरा माध्यमिक विद्यालय में भी पदार्पण हुआ। यहां प्रधानाध्यापक श्री रघुवीरसिंह झाला और श्री बाबूलाल तलेसरा ने पूज्यवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त उद्‍गार व्यक्त किए। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में तलेसरा परिवार द्वारा आचार्य महाश्रमण साधना कक्ष के निर्माण तथा उपसरपंच श्री फतेहलाल पालीवाल द्वारा कक्ष निर्माण हेतु भूमि प्रदान करने की घोषणा की गई। पूज्यवर ने विद्यार्थियों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्हें नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। विहार के दौरान नवभारत पब्लिक स्कूल, मन्दार के विद्यार्थियों ने भी पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

पूज्यप्रवर आज ६.०५ किमी. का विहार कर सायरा पधारे। शांतिदूत आचार्यवर के स्वागत में जन सैलाब उमड़ पड़ा। हर ओर श्रद्धा-भक्ति का दरिया लहरा रहा था। भव्य स्वागत जुलूस के मध्य पूज्यप्रवर सायरा पुलिस थाने में पधारे। थानाध्यक्ष श्री गजेन्द्रसिंहजी ने अपने सहकर्मियों के साथ पूज्यवर का स्वागत करते हुए नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। उत्साह से परिपूर्ण श्रावकों के बुलन्द जयघोषों के बीच पूज्यप्रवर तेरापंथ भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। सरदारशहर चतुर्मास परिसंपन्न करनेवाले मुनि विनयकुमारजी के सहवर्ती मुनि नरेशकुमारजी और धूरी (पंजाब) में चतुर्मास संपन्न करनेवाले मुनि विमलकुमारजी के सहवर्ती मुनि विनयरुचिजी चतुर्मास के पश्चात् प्रथम बार गुरुदर्शन कर आह्लाद का अनुभव कर रहे थे।

dfBu dk; dju dk y{; cuk,

आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में समायोजित था। लोगों ने बताया--पूर्व में गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के कार्यक्रम भी इसी परिसर में आयोजित हुए थे। कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल और कन्यामंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल सोलंकी, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती लीला मेहता, श्री पुखराज धोका, श्री मीठालाल भोगर, श्री जसराज मेहता, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रकुमार मेहता, मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल पोरवाल आदि ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में अपने भाव सुमन अर्पित किए। श्री जीतूभाई और कान्तिभाई मेहता ने गीत के माध्यम से सेराप्रान्त की ओर से पूज्यवर की आगामी यात्रा के प्रति मंगलभावनाएं समर्पित कीं। मुनि हितेन्द्रकुमारजी ने अपने पैतृक गांव में अपने आराध्य का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में सेराप्रान्त के तेरापंथ श्रावक समाज द्वारा कांठा के श्रावक समाज को यात्रा व्यवस्थाओं के हस्तान्तरण के प्रतीक रूप में जैन ध्वज सौंपा गया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ। श्री उदयचन्द राठौड़, श्री भूरीलाल पूनमिया, श्री जीतूभाई मेहता, श्री प्यारचन्द मेहता, श्री कान्तिभाई मेहता, श्री भीखमचन्द भोगर, श्री शेषमल कावड़िया, श्री सोहनलाल सोलंकी और श्री अंबालाल भोगर ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार कर पूज्यवर को त्यागमयी भेंट अर्पित की।

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जिस व्यक्ति ने एक अपनी आत्मा को साध लिया, उसने पूरे संसार को साध लिया। जिसने अपनी आत्मा को दुर्गुणों में डाल

दिया, उसने मानों सब कुछ विनष्ट कर दिया। जो एक आत्मा को प्रमुख मान कर चलता है, वही अपनी आत्मा को साध सकता है। उसके लिए वीतरागता की साधना आवश्यक होती है। कषायों पर विजय पाना कठिन कार्य है, किन्तु भीतर में संकल्प का भाव जाग जाए तो कठिन कार्य भी किया जा सकता है। जिसके जीवन में कठिन कार्य करने का लक्ष्य और संकल्प होता है, वह अपने जीवन में कुछ प्राप्त भी कर सकता है।'

आचार्य भिक्षु की कठोर साधना की स्मृति कर अपनी मेवाड़ यात्रा की परिसंपन्नता के प्रसंग में पूज्यवर ने कहा--'परमपूज्य महामना आचार्य भिक्षु ने जहां विचरण किया, तेरापंथ की स्थापना की, हमें उस मेवाड़ की भूमि पर आने का और स्थापना भूमि केलवा में चतुर्मास करने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने यह चतुर्मास परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की कृपा से किया। उनके वचनों को निभाने के लिए मेवाड़ में अपने मेवाड़ी श्रावकों से मिलने का मौका मिला। मेवाड़ के श्रावकों ने अपने ढंग से इस यात्रा का लाभ उठाया और अपना कर्तव्य निभाया। कहां-कहां से श्रावक अपनी पैतृकभूमि में आए। भले ही उनके गांव में एक दिन अथवा कुछ मिनटों के लिए ही गए, पर श्रावकों ने अपना अच्छा कर्तव्य निभाया। सद्भाव का अच्छा वातावरण इस यात्रा के दौरान देखने को मिला। लगभग एकवर्षीय इस मेवाड़ यात्रा के अपने संस्मरण और अनुभव हैं। हमारे साधु-साध्वियों ने काफी श्रम किया है। अपने ढंग से शक्ति का नियोजन किया है।

सायरा आगमन के प्रसंग में पूज्यवर ने कहा--'आज हम सायरा आए हैं। सायरा के मुनिश्री देवराजजी स्वामी धर्मसंघ के अच्छे संत हैं। अब तो सेवा लेने वाले बन गए हैं। एक समय था, जब उन्होंने बहुत सेवा की। उन्हें नन्दीषेण से उपमित किया गया। कितनी बड़ी बात है। मैं तो सेवा के क्षेत्र में इस उपमा को आदर्श और उच्च बात मानता हूं। मैं उनके गांव में उन्हें याद कर रहा हूं। उन्होंने जो सेवा की है, उनकी मैं विनय भाव से प्रशंसा भी कर रहा हूं। यहां के बाल युवा मुनि हितेन्द्रकुमारजी भी दीक्षा के बाद प्रायः गुरुकुलवास में ही रहे हैं। अच्छी सेवा करने वाले मुनि हैं। अब इन्हें मुनिश्री सुरेशकुमारजी स्वामी के साथ बहिर्विहार में भेजा है। खूब अच्छे संस्कार प्राप्त कर अच्छी साधना और अच्छा विकास करते रहें।' अपने प्रवचन में पूज्यवर ने सायरा के उपासक श्री पुखराज धोका आदि उपासकों की सेवाओं का भी इस अवसर पर उल्लेख किया।

सायंकालीन आहर के पश्चात् पूज्यप्रवर ने श्रद्धालुओं के पचास से अधिक घरों का स्पर्श किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में लोगों ने पूज्यवर की अभ्यर्थना में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

eokM dk vfUre iMko vj.;kokl

„‡ QjojhA परम श्रद्धास्पद महातपस्वी आचार्यप्रवर आज विहार से पूर्व सायरा के सौ से अधिक घरों में पधारे। पूज्यप्रवर के चरण-स्पर्श से अपने घर को पावन बना देखकर श्रद्धालु हर्षविभोर थे। लगभग नौ बजे पूज्यवर ने सायरा से मग्घा के लिए प्रस्थान किया। आचार्यवर का सायरा स्थित राकेशकुमार प्यारचन्द राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में भी पदार्पण हुआ।

पूज्यप्रवर उतार-चढ़ाव और पहाड़ों से घिरे घुमावदार मार्ग से ६ किमी. का विहार कर मग्घा गांव के परिपार्श्व में स्थित होटल अरण्यावास में पधारे। सघन जंगल के बीच अवस्थित अपनी इस होटल में उदयपुर निवासी श्री अनिलजी पुरोहित ने सपरिवार पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ मेवाड़ की इस यात्रा का यह अन्तिम पड़ाव स्थल प्राकृतिक रमणीयता को लिए हुए था। होटल के पार्श्व में बहता हुआ निर्झर, सघन झाड़ियों और झुरमुटों में झींगुरों की तीक्ष्ण, किन्तु कर्णप्रिय ध्वनि, विभिन्न पक्षियों का मधुर कलरव यात्रियों के आकर्षण का विषय बने हुए थे। राणकपुर मन्दिर के अवलोकन हेतु समागत होटल के अन्य कक्षों में रुके हुए अनेक विदेशी सैलानियों ने आज आचार्यवर के दर्शन कर जैन धर्म आदि के विषय में अवगति प्राप्त की।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ श्रावक समाज सेराप्रान्त के मंत्री श्री फूलचन्द चतरावत ने पूज्यवर के प्रति मंगलभाव समर्पित किए। श्री अनिल पुरोहित ने अपने होटल परिसर में प्रवास के लिए पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। मुनि कोमलकुमारजी और समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने पूज्यवर की मेवाड़ यात्रा के विषय में अपने विचार व्यक्त किए।

परमपूज्य आचार्यवर ने संबोधि के तेरहवें अध्ययन पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जिसका मन अपने साध्य आत्मा में स्थिर हो जाता है, वह अपनी आत्मा को साध सकता है। सामान्यतया साधु अधिक साधना कर सकता है। गृहस्थ सांसारिक कार्यों में लिप्त होने के कारण उतनी साधना नहीं कर पाता। गृहस्थ को भी धर्म करने का अधिकार है, किन्तु सांसारिक संबंधों की बाधाएं होती हैं। साधु का जीवन संबंधातीत होता है, जबकि गृहस्थ संबंधों का जीवन जीता है। यह दोनों में एक बड़ा अन्तर है। कसौटी का आधार साधना है। केवल केश मुंडन, वेश परिवर्तन और मुखवस्त्रिका बांध लेने से साधना का विकास नहीं होता। क्लेश, अर्थात् कषाय मंद होने पर वह विकास को प्राप्त होती है। गृहस्थ हो या श्रमण, जिस व्यक्ति की मति धर्म में स्थिर हो जाती है, वही आत्मा को साध सकता है।'

अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए आचार्यवर ने कहा--'गृहस्थ भी कभी-कभी इतनी साधना कर लेता है कि वह केवली बन जाता है। भरत चक्रवर्ती इसका उदाहरण है। सब गृहस्थ इतनी साधना न कर सकें तो कम से कम नैतिकता को आत्मसात करने का प्रयास तो अवश्य करें। अपने व्यवसाय में यथासंभव प्रामाणिकता रखें। इससे भी आत्मा शुद्धता को प्राप्त होगी। यदि संकल्प की दृढ़ता हो तो किंचित् कष्ट झेलकर भी नैतिकता को अपनाया जा सकता है। सत्य जीवन में आ जाता है तो वह अपने आप में एक बड़ी साधना होती है। गृहस्थ अपनी सीमा में रहकर यथासंभव धर्माराधना के द्वारा आत्मा को साधने का प्रयास करे।'

१४ फरवरी को रींछेड़ में प्रातः विहार से पूर्व पूज्यप्रवर गांव के भीतर पधारे और वहां उपाश्रय में प्रवासित वयोवृद्ध पन्यास श्री रत्नाकरविजयजी से मिले उनके सहवर्ती साधु-साध्वियों ने आचार्यवर की अगवानी की। तत्पश्चात् आचार्यवर कर्मणा जैन सुनार परिवार की वयोवृद्ध सदस्या को दर्शन देने गांव के और भीतर पधारे। इस प्रकार लगभग डेढ़ किमी. की यात्रा के पश्चात् आचार्यवर ने मजेरा की ओर प्रस्थान किया।

m_.k g, x#oj ¼ _.kh cuk eokM

„^ QjojhA परमपूज्य महातपस्वी शान्तिदूत आचार्यप्रवर ने आज अपनी अतिशय प्रभावक, सुफल ऐतिहासिक और पुरुषार्थपूर्ण मेवाड़ यात्रा सुसंपन्न कर मारवाड़ में मंगल प्रवेश किया। लगभग एक वर्ष की इस यात्रा में जहां परमपूज्य आचार्यवर अपने गुरु के वचनों को निभाकर उऋण हुए, वहीं अपने श्रम-सीकरों की वृष्टि से संपूर्ण मेवाड़ को चिर ऋणी बना दिया। अपने आराध्य की कृपा, वात्सल्य और करुणा में अभिस्नात बनी हुई मेवाड़ की जनता युगों-युगों तक इस महापुरुष की आभारी बनी रहेगी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः होटल अरण्यावास से राणकपुर के लिए मंगल प्रस्थान किया। मध्यवर्ती गुर्जर परिवार के अनेक घर पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बने। आज का पूरा पथ अरण्यमय था। उत्तुंग पर्वतमालाएं, उनकी छाती पर अपनी जड़ें जमाए असंख्य वृक्ष, बड़ी-बड़ी चट्टानें और उनके बीच अपना रास्ता बनाकर बहते हुए निर्झर, गहरी खाइयां आदि विविध दृश्य राहगीरों को प्रकृति के प्राङ्गण में रमण करने का आनंद प्रदान कर रहे थे। किन्तु गहरे उतार-चढ़ाव से युक्त सर्पाकार मार्ग भारी वाहन चालकों के छोटे से प्रमाद को भी क्षमा करने को तैयार नहीं था। मार्ग इतना घुमावदार था कि लगभग सात किमी. दूर से ही राणकपुर का विशाल मन्दिर नयनों का विषय बन रहा था। अपनी स्वाभाविक चपलता के वशीभूत वृक्षों पर उछल-कूद मचाते सैकड़ों लंगूर अहिंसा यात्रा को कुतूहलवश निहार रहे थे।

हवा के हल्के झोंके से भी गिरने वाले वृक्षों के पीले पत्ते जहां जीवन की नश्वरता का बोध करा रहे थे, वहीं ऊंचे पर्वत और उनके परिपार्श्व में अवस्थित गहरी खाइयां अनुकूल और प्रतिकूल--दोनों परिस्थितियों का संदेश लिए हुए थे। इस दुर्गम पथ में साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्यवर के आगे-आगे और मुनिवृन्द पूज्यचरणों का अनुगमन करते हुए गतिमान थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर मालगढ़ के निकट स्थित मेवाड़ और मारवाड़ के संगम स्थल पर पधार कर कुछ क्षण रुक गए। मेवाड़ी भक्तों ने अपने प्रभु को सजल नेत्रों से विदाई दी। मारवाड़ के सैकड़ों श्रद्धालु अपने आराध्य का स्वागत करने को उत्सुक हो रहे थे। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां भी पूज्यवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थीं। चतुर्विध धर्मसंघ की समुपस्थिति में पूज्यवर ने एक पद्य के प्रथम दो चरणों की रचना करते हुए मारवाड़ की सीमा में पावन प्रवेश किया और प्रवेश के साथ ही पद्य के अन्तिम दो चरणों को भी समुच्चरित किया। वह पद्य इस प्रकार है--

enikV l y jg] d'ky fonkb vktA
vc e#èkj e vk pd] fl) gvk lc dkt Ï

इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने भी एक पद्य की रचना की, जो इस प्रकार है--

eupkgk ojnku ik] enikV drdkeA
pj.k ijl ik vc cuk] e#èkj rhjFkèkke Ï

उदयपुर जिले से पाली जिले में प्रवेश के साथ ही पाली जिले के श्रद्धालुओं ने अपने प्रभु का सादर स्वागत और अभिनंदन किया। फ्रांस से समागत पर्यटक अपने कैमरों में इस दृश्य को कैद कर भावविभोर थे। लगभग ११.०६ किमी. का विहार कर आचार्यवर राणकपुर के प्राचीन सुविख्यात जैन मन्दिर परिसर में पधारे। राणकपुर मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोजभाई शाह आदि पदाधिकारियों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर का प्रवास कस्तूरभाई लालभाई धर्मशाला में हुआ।

eokM ;k=kk % mYy[kuh; rF;

परम श्रद्धेय आचार्यवर की लगभग एकवर्षीय मेवाड़ यात्रा अतिशय सफलता लिए हुए सानंद संपन्न हुई। पूज्यवर ने अपनी इस ऐतिहासिक यात्रा में १६२४.०५ किमी. का विहार किया। ३४४दिवसीय इस यात्रा में महातपस्वी आचार्यवर ने केलवा चतुर्मास के १२०दिवसीय प्रवास और आमेट मर्यादा महोत्सव के २१दिवसीय प्रवास के अतिरिक्त केवल ३६ दिन ही प्रवास किया। शेष १६७ दिनों में पूज्यप्रवर के विहार का क्रम जारी रहा। यहां प्रस्तुत है पूज्यप्रवर के पौरुष की अमिट कहानी कहने वाली इस अत्यन्त प्रभावक यात्रा के कुछ उल्लेखनीय तथ्य--

- सरदारशहर में पदाभिषेक के पावन प्रसंग पर पूज्यप्रवर ने ऐतिहासिक मेवाड़ यात्रा की घोषणा की। उसके बाद वर्ष व तिथि का निर्धारण हुआ। १६ मार्च २०११ को वह स्वर्णिम क्षण आया, जब अजमेर जिले के अन्तिम क्षेत्र विजयनगर से पूज्यवर ने प्रस्थान किया और मध्यवर्ती खारी नदी को पार कर भीलवाड़ा जिले के गुलाबपुरा क्षेत्र में प्रवेश किया। बड़ी संख्या में मेवाड़ी श्रद्धालुजनों ने गुरुचरणों में पलक-पांवड़े बिछा दिए। २५ फरवरी २०१२ को अरावली की वादियों में स्थित छोटा-सा गांव मग्घा मेवाड़ की इस अहिंसा यात्रा का अन्तिम मुकाम बना। इस मेवाड़ यात्रा में राजसमन्द, उदयपुर, भीलवाड़ा व चित्तौड़ जिले के साथ अजमेर जिले का भी स्पर्श हुआ।
- आचार्यवर के ५०वें वर्ष के संदर्भ में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी के विशेष निवेदन पर उद्घोषित आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव का प्रसंग अहिंसा यात्रा के साथ अपूर्व उल्लास एवं भक्ति का कारक बना। मेवाड़ की धरती पर कांकरोली, केलवा व आमेट में क्रमशः तीन चरण आयोजित हुए। चौथा चरण ३० अप्रेल २०१२ को आयोज्य है तथा पांचवां चरण सन् २०१३ के लाडनूं प्रवास

में होना निर्धारित है। अमृत महोत्सव के अंतर्गत पंचाचार विकास की दृष्टि से अनेक उल्लेखनीय कार्य संपादित हुए हैं। यह भी एक संयोग ही था कि परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने भी अपने अमृत महोत्सव को मनाने का सौभाग्य मेवाड़ को ही प्रदान किया था।

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की इस मेवाड़ यात्रा का प्रमुख लक्ष्य था अपने गुरु के वचनों को निभाना। यह आचार्यवर की अपने गुरु के प्रति गहरी निष्ठा और भक्ति का साक्षात् निदर्शन था। जहां पूज्यप्रवर ने केलवा चतुर्मास, आमेट मर्यादा महोत्सव, रींछेड़ अक्षयतृतीया और शिशोदा महावीर जयंती के माध्यम से गुरु वचनों को अक्षरशः निभाकर उऋण हुए, वहीं मेवाड़ी जनता को अपनी वत्सलता, करुणा, कृपा और पुरुषार्थ के अभिसिंचन से चिरऋणी बना दिया। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि पूज्यप्रवर द्वारा मेवाड़ में किया गया यह महाश्रम तेरापंथ की नींव को और अधिक गहराने वाला था। अनेक मेवाड़ी श्रावकों का यह स्वर था--'गुरुदेव ने हम मेवाड़ी भक्तों पर बहुत कृपा की। अब हमारा कर्तव्य है कि हम उनके सपनों को साकार करने में अपना सर्वस्व न्योछावर करें।'
- लाछुड़ा में मेवाड़स्तरीय अभिनंदन समारोह की अतिशय उपस्थिति ने मन को मोहा तो शिशोदा व रींछेड़ में आयोजित क्रमशः महावीर जयंती व अक्षय तृतीया आयोजन की विराट उपस्थिति ने कीर्तिमान गढ़े। कांकरोली में प्रारब्ध आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव में राष्ट्रपति का आगमन गरिमा को वृद्धिंगत करने वाला था। इतिहास प्रसिद्ध कुंभलगढ़ दुर्ग की यात्रा रमणीय बनी तो कुंचोली-दोवास के मध्य मधुमक्खियों के आक्रमण की घटना रोंगटे खड़ी करने वाली थी। कोशीवाड़ा में आयोजित जनप्रतिनिधि सम्मेलन ऐतिहासिक बना तो उदयपुर में आचार्यवर को समर्पित **^"kkfUrnr*** सम्मान अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक बना। केलवा का पावस प्रवेश जनसागर का ज्वार बना। सड़क नहीं श्रद्धालु भक्त ही दूर-दूर तक दृष्टिगत हो रहे थे। पूर्वांचल यात्रा की विधिवत घोषणा व कई चतुर्मास व मर्यादा महोत्सव की निर्णायकता ने केलवा चतुर्मास को यादगार बना दिया। भीलवाड़ा का प्रवास आमेट का १४८वां मर्यादा महोत्सव अत्यन्त प्रभावक रहे। तेरापंथ आचार्य परंपरा के तीन नक्षत्र--द्वितीय आचार्य भारमलजी, तृतीय आचार्य रायचन्दजी व अष्टमाचार्य कालूगणी के महाप्रयाण क्षेत्र क्रमशः राजनगर, रावलियाखुर्द व गंगापुर पदार्पण के साथ पूज्यप्रवर का आचार्य पदाभिषेक के पश्चात् तेरापंथ के आठ आचार्यों की महाप्रयाण भूमि में पदार्पण हो गया।
- आमेट में आयोजित १४८वें मर्यादा महोत्सव पर मुनिवृन्द के सामूहिक गीत के ये बोल मर्यादा समवसरण में गूंजे--'मेवाड़ी भक्तों को प्रभु ने पुचकारा है, वापिस कब आओगे चाहते इशारा है।' यह सुनकर समवसरण में उपस्थित अधिकांश लोगों ने खड़े होकर अपने जोश के साथ उमड़ और उभर रहे भाव-ज्वार को प्रकट किया।
- लगभग एक वर्ष तक मेवाड़ी भूभाग में होने वाली आचार्यवर की यह यात्रा रोमांचकारी और आनंदपूर्ण रही। आरोह और अवरोह से युक्त उबड़-खाबड़ पहाड़ी पगडंडियों पर चलना अनेक साधु-साध्वियों के लिए अपूर्व अनुभव था। इस वन्य प्रदेश में अवस्थित अरावली की प्रलम्ब पर्वत शृंखलाएं विभिन्न प्रकार के वृक्ष, विविध पशु-पक्षी, गहरी खाइयां, कल-कल कर बहते निर्झर, बेलचालित रहट, दर्रों में होने वाली खेती आदि मनोहर दृश्य प्रकृति के आनंद में सराबोर करने वाले रहे। प्रकृति के प्राङ्गण में होने वाली यह यात्रा कठिन होते हुए भी आह्लाददायक रही।
- पूज्यप्रवर की यह यात्रा संघीय दृष्टि से अतिमहत्त्वपूर्ण और उपयोगी रही। तेरापंथ के एकादशमाधिस्ता का मेवाड़ के १८१ ऐसे क्षेत्रों में पदार्पण हुआ, जहां तेरापंथी परिवारों का निवास है। श्रद्धालुओं के अतिशय उल्लास में प्रतिबिम्बित होने वाले उनके अलौकिक आनंद से प्रत्यक्ष अनुभव हुआ कि अपने परम प्रभु का समागमन भक्तों के लिए परम धन्यता की अनुभूति कराने वाला होता है। भक्तवत्सल आचार्यप्रवर ने तो कृपादृष्टि की झड़ी-सी लगा दी। कोई भी श्रद्धालु आपके दरबार

से खाली हाथ नहीं लौटा। अनेक बार एक दिन में दस से अधिक कि.मी का चक्कर लेकर भी पूज्यप्रवर ने श्रद्धालुओं की भावना को तृप्त किया। इसी प्रकार एक-एक परिवार की संभाल के लिए भी भक्तवत्सल आचार्यवर ने बहुत बार अतिरिक्त विहार किया।

- संपूर्ण मेवाड़ यात्रा में आचार्यप्रवर ने तेरापंथ समाज और अन्य जैन परिवारों को परिवारिक सेवा का अवसर प्रदान कर उनकी सार संभाल की। इस दौरान आचार्यवर ने पारिवारिक परिचय लेने के साथ-साथ हजारों लोगों को नमस्कार महामंत्र की माला, सामायिक, नशामुक्ति आदि का संकल्प कराया और उन्हें पारिवारिक सौमनस्य बनाए रखने, अपने क्षेत्र में प्रवासित साधु साध्वियों की दर्शन-सेवा करने, धार्मिक संस्कारों को परिपुष्ट रखने आदि की प्रेरणा प्रदान की। इस सेवा के पश्चात यदा-कदा चलने वाले जिज्ञासा-समाधान के क्रम में अनेक लोगों ने मन में उठने वाले अपने प्रश्नों को भी पूज्यप्रवर से समाहित किया। पूज्यप्रवर की इस प्रकार निकट उपासना श्रद्धालुओं के जीवन की अमूल्य और अविस्मणीय थाती बन गई।
- यात्रा के दौरान पौरुष के मूर्तिमान आदर्श पुरुष महातपस्वी आचार्यप्रवर ने अधिकांश क्षेत्रों में तेरापंथ समाज और जैन समाज के प्रायः सभी घरों में चरण स्पर्श किए। अनेक बार इस कारण विहार की दूरी तीन कि.मी. से भी अधिक बढ़ गई। कभी-कभी तो मात्र इसी कारण आठ-दस कि.मी. का विहार हो गया। ऐसे भी अनेक अवसर आए, जब पूज्यप्रवर ने एक समय में सवा सौ से अधिक घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। यदि इस दूरी को भी यात्रा पथ में जोड़ा जाए तो यह मेवाड़ यात्रा कई सौ किलोमीटर बढ़ जाती है। अपने आंगन में अपने आराध्य के पादार्पण से तृप्त श्रावकों का आन्तरिक हर्षोल्लास अनिर्वचनीय होता था। उनकी आस्था का ज्वार उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था।
- आचार्यप्रवर के प्रकृष्ट औदार्य और अहिंसा यात्रा के असाम्प्रदायिक वातावरण का प्रभाव यात्रा के दौरान साक्षात देखने को मिला। आचार्यप्रवर के पादार्पण से तेरापंथ समाज के स्थानीय प्रवासियों द्वारा अपना घर खोलना स्वाभाविक था। किन्तु इतर जैन अनुयायियों द्वारा अपने घर खोलना और प्रत्येक कार्य में बढ़-चढ़कर सहभागी बनना आश्चर्यकारी रहा। मेवाड़ में अनेक क्षेत्र तो ऐसे थे, जहां केवल अन्य जैन परिवार ही निवासित है, तेरापंथ समाज का एक भी घर वहां नहीं है। परन्तु उनके भक्तिपूर्ण उल्लास और उत्साह ने इस बात का अहसास तक नहीं होने दिया। मगरा प्रान्त के स्थानकवासी और मूर्तिपूजक बहुत क्षेत्रों में प्रथम बार सभी जैन घरों का खुलना निःसंदेह इसी बात की पुष्टि करता है।
- कुल ३२७ क्षेत्रों में आचार्यप्रवर ने जनता को आध्यात्मिक पाथेय प्रदान किया। ग्रामीण अंचलों में ग्रामीणों की श्रद्धासिक्त भावना विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। पूज्यप्रवर के पदार्पण से गांव के प्रायः प्रत्येक वर्ग में नई उमंग छा जाती थी। स्वागत जुलूस और कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उनकी उत्साहपूर्ण उपस्थिति अहिंसा यात्रा की सार्थकता को परिपुष्टि प्रदान करती थी। आदिवासी अंचलों में भील, गमेती आदि समाज के लोग भी आचार्यप्रवर के दर्शन और प्रवचन श्रवण से लाभान्वित हुए और उन्होंने अपनी बुराइयों को त्यागकर स्वस्थ जीवनशैली की दिशा में प्रयाण किया। अनेक क्षेत्रों में विशाल किसान सम्मेलनों की भी समायोजना हुई।
- पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के चार आयामों में एक आयाम है नशामुक्ति। इस यात्रा में आचार्यवर की प्रेरणा से प्रभावित हजारों लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। यह सब आचार्यप्रवर के करिश्माई व्यक्तित्व और स्नेहपूर्णवाणी का ही चमत्कार था। न केवल जैनेतर समाज में अपितु जैन समाज में भी यह अभियान सघनता के साथ गतिमान रहा। गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, खैनी, शराब, चिलम, गांजा, भांग आदि मादक पदार्थों के अभ्यस्त ग्रामीणों के जीवन का यह नया प्रभात था। एक देवदूत ने मानों उनके हृदय के अन्तस्तल में सदाचार रूपी ईश्वर को प्रतिष्ठापित कर दिया।

इस कार्य में संतो, तेरापंथ युवक परिषद्, उधना व अणुव्रत से जुड़े कार्यकर्ताओं का प्रयास भी सराहनीय रहा।

- मेवाड़ यात्रा में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी दो दिन छोड़कर पूरी यात्रा में आचार्यवर के साथ रहीं। उत्कट मनोबल व दृढ़ संकल्प का ही बल था कि आरोह-अवरोह वाले रास्ते में साधन का प्रयोग करते हुए भी कई किमी. की यात्रा पैदल चलकर करती रहीं। क्षेत्रों में भी घर स्पर्शना व पारिवारिक सार-संभाल का क्रम अनवरत चलता रहा। बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों एवं सेवार्थियों को भी साध्वीप्रमुखाजी की निकट उपासना का अवसर सहज सुलभ रहता था।
- मेवाड़ यात्रा में मौसम बड़ा मेहरबान रहा। झुलसाने वाली गर्मी, धूल भरी आंधी, बदन को चीरनेवाली लू और पसीना बहाने वाली उमस से सहज निजात मिली। मामूली गर्मी के अलावा सहज खुशनुमा वातावरण रहा। चतुर्मास में बरामदे में भी शयन का क्रम स्वल्प ही रहा। इस वर्ष मेवाड़ के प्रायः भू-भाग में अच्छी वर्षा हुई। समाचार पत्रों व लोगों से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार मेवाड़ के प्रायः छोटे-बड़े तालाब व बांध अधिकांशतः भर गए। कई तालाबों और बांधों में चादर कई दिन और महीनों तक चलती रही। खेतों में पैदावार भी अच्छी हुई।

Lefr&lcy

- सोजतरोड निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती अणचीदेवी मूथा (धर्मपत्नी-स्व. जुगराजजी मूथा) का देहावसान हो गया। पूज्य आचार्यवर से 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त श्रीमती अणचीदेवी मूथा की धार्मिक निष्ठा प्रखर थी। अन्तिम समय में उन्हें पूज्यवर का प्रेरक सन्देश प्राप्त हुआ। उनके सुपुत्र मीठालालजी, गौतमजी, भूपेन्द्रजी, महावीरजी समाज के निष्ठाशील कार्यकर्ता हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- उदयपुर निवासी श्री राजेन्द्रकुमार भोलावत (सुपुत्र स्व. मनोहरलालजी भोलावत पोरवाल) का स्वर्गवास हो गया। भोलावत परिवार मंत्री मुनिश्री मगनलालजी स्वामी के संसारपक्षीय परिजन (पांचवीं पीढ़ी) एवं शासनश्री मुनि रवीन्द्रकुमारजी के संसारपक्षीय चचेरे भाई थे। धर्मसंघ के निष्ठाशील कार्यकर्ता थे। विभिन्न संस्थाओं से जुड़े राजेन्द्रजी 'श्रेष्ठ शिक्षक' के रूप में सम्मानित हुए थे। उनकी धर्मपत्नी सुशीलाजी ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं। पूरा परिवार धर्मसंघ के प्रति समर्पित है।
- सरदारशहर निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती कानकंवरीदेवी बरड़िया (धर्मपत्नी-श्री भंवरलालजी बरड़िया का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने दीहट्टा महिला मंडल की अनेक वर्षों तक अध्यक्ष व मंत्री के रूप में अपनी सेवाएं दीं। पखवाड़ा, मासखमण व अन्य तपस्याएं करने वाली श्राविका कानकंवरीदेवी ने त्याग-प्रत्याख्यानमय जीवन जीया। उनके सुपुत्र भानुप्रकाशजी दिल्ली के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- उज्जैन निवासी श्री प्रकाशचन्द पीपाड़ा का मुम्बई में देहावसान हो गया। वे सप्तमाचार्य पूज्य डालगणी के संसारपक्षीय प्रपौत्र थे। समण सिद्धप्रज्ञजी के मामा थे। साठ वर्षीय पीपाड़ाजी धार्मिक, सरल व सेवाभावी श्रावक थे। शोकाकुल परिवार को समणजी के पहुंचने से धार्मिक संबल प्राप्त हुआ।
- जोबनेर निवासी कोटा प्रवासी बालक प्रणय बरड़िया (सुपुत्र-चेतनप्रकाश बरड़िया) का अल्पायु में देहान्त हो गया। बालक प्रणय रात्रि को सामान्य रूप से सोया, पर प्रातः उठ नहीं सका। बिना किसी बीमारी व अन्य किसी दृष्ट कारण के उसके आकस्मिक निधन से परिवार में शोकमय वातावरण बनना स्वाभाविक था। नौवीं कक्षा का छात्र प्रणय हंसमुख, कुशाग्रबुद्धि व धार्मिक विचार वाला था। तत्र प्रवासित मुनि रमेशकुमारजी से परिवार को आध्यात्मिक संबल प्राप्त हुआ।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

३१००/- स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी खटेड़ (धर्मपत्नी-स्व. धनराजजी खटेड़ 'मुकुल') को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र भंवरलाल, तोलाराम, सुमतिकुमार, सुशीलकुमार, शान्तिलाल, सुनील खटेड़, लाडनूं-दिल्ली-गुवाहाटी द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रीमती कैलाशदेवी ढीलीवाल (धर्मपत्नी-स्व. रोशनलालजी ढीलीवाल, चित्तौड़गढ़) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू कीर्ति-छाया, संजय-प्रीति, सुपौत्र पुनीत, श्रेयांश, सुपौत्री हिमिशा, मीलू ढीलीवाल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मोहनीदेवी बरड़िया (धर्मपत्नी-स्व. भंवरलालजी बरड़िया, सरदारशहर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू जुगराज-मगनदेवी, विजयसिंह-गुलाबदेवी, जयसिंह-कमला, चंदनमल-मंजु, बाबूलाल-सुधा, राजकुमार-शर्मिला, सुपौत्र व पौत्रवधू-कमल-नम्रता, अमित-आरती, विमल-सरिता, नवीन-रजनी, रवि-वंदना, रोहित व शुभम बरड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती रतनीदेवी नौलखा (धर्मपत्नी-स्व. मदनचन्दजी नौलखा, सरदारशहर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू श्रीचन्द-कान्ता, सुपौत्र व पौत्रवधू अमृत-प्रियंका, अभिषेक व प्रपौत्री महक नौलखा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती चन्द्रकला डागा (धर्मपत्नी-श्री बालचन्दजी डागा, बीदासर-मुम्बई) की प्रथम पुण्यतिथि (८ मार्च) पर भावभीनी भावांजलि के साथ सुपुत्र व पूत्रवधू नरेन्द्र-सुमन, महेन्द्र-पायल, जीतू-मौसम डागा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री भंवरलालजी भंसाली (सुपुत्र-स्व. सोहनलालजी भंसाली, गंगाशहर-पाली) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू अरुण-कनक, अनिल-प्रेम, सुपौत्र सौरभ, युग, सुपौत्री सुरभि, शुचिता, योगिता भंसाली द्वारा प्रदत्त।

iqjLdkjk dh ?kks"k.kk

'अणुव्रत पुरस्कार'-२०११-१२ पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी.एन.शेषन को तथा 'प्रेक्षा पुरस्कार' उदयपुर निवासी श्री जी.एल.जैन को प्रदान किया जाएगा।

nh{kk dk vkn'k

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने पारलू प्रवास के दौरान २ जून को मुमुक्षु परिमल (पारलू) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

lèkkj dj i< :-परम श्रद्धेय आचार्यवर ने समदड़ी प्रवास के दौरान ३१ मई को मुमुक्षु हेमलता (समदड़ी) को साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

lEid d fy, gekjk irk&&

d'koi lkn pronh] icUèkd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&Jh fHk{k lekfèk LFky lLFkku

ik-flfj;kjh&306027] ft-ikyh ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641

fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % 3&3&2012

●

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mik è;k; ekx] ubZ fnYyh&110002 d fy, cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr rFkk iou fiVl] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 l efnrA lEikndh % **d'koi lkn pronhA**